रचनात्मक आकलन

गिरते शैक्षिक स्तरों को ऊपर उठाने का एक कारगर उपाय

पॉल ब्लैक एवं डेलन विलियम

ऐसे वक्त में जबकि रचनात्मक आकलन को बिना संजीदगी से आजमाए नाकारा घोषित कर देने की जोरदार व कामयाब कोशिशें होती नजर आ रही हों तब इसकी पैरवी करना निहायत ही मुश्किल लेकिन उतना ही जरूरी काम हो जाता है। साल दर साल होने वाली परीक्षाओं के नतीजों से हमें यह पता चलता रहता है कि शिक्षा संस्थानों, अध्यापकों व बच्चों के शैक्षिक स्तर गिर रहे हैं और इन्हें ऊपर उठाए जाने की सख्त जरूरत है। पिछले कुछ समय से पूरी दुनिया भर की सरकारें बच्चों के शैक्षिक स्तरों को उठाने के पीछे हाथ धोकर पड़ी हैं लेकिन इसके बावजूद उनके शैक्षिक स्तर ऊपर उठने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। वैसे भी हमारे यहां परीक्षाओं की धार को भोथरा करके आकलन की तरफ ज्यादातर कदम नीतिगत स्तर पर उठाए गए हैं जो कि मोटे तौर पर कागजों में ही सीमित हैं। नीतिगत स्तर पर आकलन को शामिल कर लिए जाने का नतीजा यह हुआ है कि बहस की शब्दावली में परीक्षा के बजाय योगात्मक व रचनात्मक आकलन की बात की जाने लगी है। उनके लिए प्रारूप बनने व काम में लिए जाने लगे हैं लेकिन स्कूलों में रचनात्मक आकलन के नाम पर मोटे तौर पर योगात्मक आकलन यानी परीक्षाएं ही हो रही हैं।

आमतौर पर सरकारें शैक्षिक स्तर उठाने के लिए निवेश और नतीजों के मॉडल पर यकीन रखती हैं। उनका मानना होता है कि कक्षा, अध्यापक व विद्यालय में फलां-फलां निवेश करो, नतीजे के तौर पर बच्चों के शैक्षिक स्तर, अध्यापकों की संतुष्टि/स्तर आदि में बढ़ोतरी हो जाएगी। इसके लिए वे मानदंडों को ऊपर उठाने और जवाबदेही को बढ़ाने में जुटे रहते हैं लेकिन कक्षाओं के अंदर चलने वाली सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएं उनकी निगाहों से ओझल-सी रहती हैं। नतीजा यह होता है कि हालातों को दुरुस्त करने के बारे में, खास तौर पर अध्यापक, अंधेरे में ही हाथ-पैर मारते रहते हैं। उन्हें अपने काम को बेहतर तरीके से अंजाम देने के लिए उपयुक्त निर्देश नहीं मिल पाते। किसी जगह पर किया गया निवेश आपको मनमाफिक नतीजे कैसे दे सकता है जब तक आपको यह तक पता नहीं हो कि आखिर निवेश वाली जगह यानी कक्षा के अंदर होता क्या है?

कई व्यक्ति इसका जवाब कुछ इस तरह से देते हैं कि यह जिम्मा तो अध्यापक का है कि वे कक्षा में किए जाने वाले कामकाज को बेहतर बनाएं। लेकिन यह जवाब दो वजहों से ठीक नहीं लगता। पहला, कक्षा की अंदरूनी प्रक्रियाओं के गैर-जानकारों द्वारा सुझाए गए कई बदलाव नुकसानदायक हो सकते हैं और उनकी वजह से मानदंडों का बढ़ना मुश्किल हो सकता है, लेकिन उसका जिम्मा अध्यापक के सिर पर आ पड़ता है। दूसरा यह इसलिए भी ठीक नहीं है कि मानदंडों को बढ़ाने का सबसे मुश्किल व अहम् काम का जिम्मा अध्यापकों के जूझने के लिए छोड़ दिया जाता है।

इस लेख में सीखने व सिखाने के अहम् पहलू- रचनात्मक आकलन- पर विचार किया गया है और यह दलील दी गई है कि इसके जरिए शैक्षिक स्तरों को कामयाबी के साथ ऊपर उठाया जा सकता है।

"रचनात्मक आकलन सीखने व सिखाने के बारे में यह मानकर चलता है कि उसे अंतःक्रियात्मक होना चाहिए। यानी, उससे जुड़े दोनों पक्षों- शिक्षार्थी और अध्यापक- को सक्रिय होना चाहिए। शिक्षार्थी तो बगैर थोड़ा-बहुत सक्रिय हुए कुछ भी नहीं सीख सकता लेकिन अध्यापक के लिए भी यह जरूरी है कि वह सीखने वाले की सीखने में हुई तरक्की व मुश्किलों को समझे ताकि उनकी अलग-अलग तरह की जरूरतों को समझ कर मदद कर पाए।"

इस दलील पर बात करने से पहले सीखने व आकलन के मायने पर अपनी मान्यता सामने रखना जरूरी है। रचनात्मक आकलन सीखने व सिखाने के बारे में यह मानकर चलता है कि उसे अंतःक्रियात्मक होना चाहिए। यानी, उससे जुड़े दोनों पक्षों- शिक्षार्थी और अध्यापक- को सक्रिय होना चाहिए। शिक्षार्थी तो बगैर थोड़ा-बहुत सक्रिय हुए कुछ भी नहीं सीख सकता लेकिन अध्यापक के लिए भी यह जरूरी है कि वह सीखने वाले की सीखने में हुई तरक्की व मुश्किलों को समझे ताकि उनकी अलग-अलग तरह की जरूरतों को समझ कर मदद कर पाए। इसी तरह आकलन का मतलब ऐसी सभी गतिविधियों से है जिनके अध्यापकों व शिक्षार्थियों को वे सूचनाएं मिलती हैं जिनकी मदद से वे सीखने व सिखाने को बेहतर करने या सुधारने में इस्तेमाल कर सकते हैं। जब ऐसे सबूतों को सीखने-सिखाने को बेहतर करने में इस्तेमाल किया जाता है तब वह रचनात्मक आकलन हो जाता है।

बच्चों के सीखे हुए का आकलन करना किसी भी अध्यापक के लिए आम बात है। लेकिन रचनात्मक आकलन की पैरवी करने के लिए हमें इन तीन सवालों के जवाब तलाशने होंगे कि हमारे पास इस बात के क्या सबूत हैं कि,

1. क्या रचनात्मक आकलन से शैक्षिक स्तरों में बढ़ोतरी होती है?
2. क्या आकलन में बेहतरी की कोई गुंजाइश है?
3. रचनात्मक आकलन को बेहतर कैसे बनाएं?

पॉल ब्लैक व डेलन विलियम ने पिछली सदी के नौवें दशक के करीब नौ सालों के दौरान किए गए शोधों का अध्ययन करके यह पाया कि इन तीनों सवालों के जवाब साफ तौर पर हां में है। इस लेख में उस अध्ययन की मदद से रचनात्मक आकलन की एक औजार की तरह पैरवी करने के लिए मिले सबूतों से प्राप्त नतीजों को रखा गया है। वे इसके साथ ही यह भी ध्यान दिलाते हैं कि शिक्षा में बदलाव बेहद धीमी रफ्तार से होते हैं और रचनात्मक आकलन भी कोई जादू की छड़ी नहीं है जिसे फिराते ही सभी चीजें एक झटके में ठीक हो जाएं।

क्या रचनात्मक आकलन से शैक्षिक स्तरों में बढ़ोतरी होती है?

वे शोधों के अध्ययनों से इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि जिन नवाचारों में रचनात्मक आकलन की मजबूत हिस्सेदारी थी उनमें सीखने में बढ़ोतरी काफी व सार्थक हुई थी। इसी के साथ उन्होंने एक अन्य प्रमुख नतीजा यह भी निकाला कि रचनात्मक आकलन के इस्तेमाल से कम उपलब्धि हासिल करने वाले बच्चों को बाकी की तुलना में ज्यादा फायदा हुआ।

उन शोधों के अध्ययन की मदद से वे कई दूसरे मुद्दों पर भी कुछ नतीजों पर पहुंचे, जैसेः

1. ऐसे सभी कार्यक्रमों में छात्र व अध्यापक के बीच फीडबैक को बढ़ाने के लिए नए तरीके इस्तेमाल किए गए। उन तरीकों का इस्तेमाल करने में कक्षाओं में ढेर सारे बदलावों की जरूरत पड़ी।

"स्व-आकलन रचनात्मक आकलन की एक अहम् व जरूरी कड़ी है। बहुत से नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम रचनात्मक आकलन को समृद्ध करने में स्व-आकलन व साथियों द्वारा किए गए आकलन को भी शामिल करते हैं। बच्चे खुद का सही आकलन कर सकते हैं। वे अपना आकलन ईमानदारी के साथ व सही-सही कर सकते हैं।"

2. सभी कार्यक्रमों के असरदार ढंग से सीखने के लिए बच्चों की सक्रिय भागीदारी को शामिल किया गया था।
3. रचनात्मक ढंग से काम लेने के लिए आकलन के नतीजों के आधार पर सीखने व सिखाने में उपयुक्त बदलाव किए गए, नतीजतन सभी कार्यक्रमों का एक अहम् पहलू यह था कि अध्यापक उन बदलावों के बारे में निर्णय कर पाएं।
4. शिक्षार्थियों के आत्म सम्मान तथा प्रेरणा पर असर डालने के तरीकों तथा उन्हें स्व-आकलन में जोड़ने पर सावधानीपूर्वक काम किया गया।

क्या मौजूदा आकलन में बेहतरी की गुंजाइश है?

आमतौर पर आकलन से मिलने वाले नतीजों का इस्तेमाल आगे के सिखाने के कामों में नहीं किया जाता। इस बात को मौखिक समर्थन तो मिल जाता है लेकिन ज्यादातर लोग इसे मौजूदा शैक्षिक हालातों में अव्यवहारिक मानते हैं। मौजूदा आकलन में आने वाली मुश्किलों को तीन खानों में बांटकर समझा जा सकता है।

असरदार सीखना

आकलन के नतीजों का इस्तेमाल रटने व सतही ढंग से सीखने में किया जाता है लेकिन कहा यही जाता है कि इससे समझ विकसित करने की कोशिश की जा रही है। बहुत से अध्यापक तो इस बेमेलपने से अनजान होते हैं। इसी तरह आकलन में शामिल किए गए सवालों व तरीकों की आलोचनात्मक समीक्षा नहीं की जाती है कि आखिर वे किस बात का आकलन करते हैं। प्राथमिक स्तर पर आकलन के साथ सीखने की गुणवत्ता के संबंध के बजाय काम की मात्रा तथा उसके प्रस्तुतीकरण पर ज्यादा जोर दिया जाता है।

नकारात्मक असर

आकलन में अंकों व ग्रेडिंग पर बहुत ज्यादा लेकिन उपयोगी सलाह व सीखने के कामों पर बहुत कम जोर दिया जाता है। ऐसे तरीके काम में लिए जाते हैं जिनमें छात्रों की आपस में तुलना करने का इस्तेमाल वैयक्तिक बेहतरी को बढ़ावा देने के बजाय होड़ बढ़ाने के लिए किया जाता है। इससे कमजोर बच्चों को फीडबैक मिलता है कि ये तो हैं ही नाकाबिल, नतीजतन वे धीरे-धीरे खुद में भरोसा खो बैठते हैं।

प्रबंधकीय रोल

अध्यापकों द्वारा छात्रों को दिया गया फीडबैक सीखने के मकसदों के बजाय सामाजिक व प्रबंधकीय मकसदों को पूरा करता है। अध्यापक बाहरी परीक्षाओं के आधार पर छात्रों के लिए नतीजे घोषित करते हैं जबकि वे बच्चों की सीखने की जरूरतों के बारे में बेहद कम ही जानते हैं। बच्चों के काम के विश्लेषण करने की तुलना में अंकों के रिकॉर्ड को भरने को ज्यादा तरजीह दी जाती है। कई बार अध्यापक पिछले अध्यापकों के आकलन के रिकॉर्ड पर बिल्कुल ध्यान ही नहीं देते। हालांकि सरकारों ने नीतियां रचनात्मक आकलन के लिए बना रखी हैं लेकिन उनकी राह में रोड़े बहुत सारे पड़े रहते हैं। इस काम के लिए पैसा भी कम रखा जाता है।

सरकारों का पूरा ध्यान बाहरी परीक्षणों पर रहता है। बाहरी परीक्षण जो कि योगात्मक होते हैं उनमें अध्यापकों की भागीदारी भी बेहद कम रखी जाती है। रचनात्मक आकलन को राजनैतिक समर्थन भी बेहद कम मिलता है। योगात्मक आकलन को समर्थन बहुत ज्यादा मिलता है क्योंकि होड़ को बढ़ावा देना राज और समाज दोनों की ही केन्द्रीय प्राथमिकता है। योगात्मक परीक्षाएं केन्द्रीयकृत होती हैं सो वे कुछ प्रवृत्तियां तो बता देती हैं लेकिन निदान नहीं सुझातीं। उन परीक्षाओं में अध्यापकों पर भरोसा नहीं किया जाता। आमतौर पर यह माना जाता है कि बाहरी परीक्षाएं सीखने को बेहतर बना देंगी। इन और ऐसी ही कई दूसरी वजहों से आकलन में योगात्मक आकलन का दबदबा जारी रहता है।

क्या हम रचनात्मक आकलन को बेहतर बना सकते हैं?

आकलन से मिलने वाली सभी सूचनाएं आखिरकार बच्चों के सीखने को बेहतर करने के लिए हासिल की जाती हैं। इस बात से जुड़े आकलन के नकारात्मक पहलुओं की सूची बनाई जाए तो वह कुछ ऐसी बन सकती है।

पहली, जब कक्षा में पुरस्कार, श्रेणी, स्टार आदि को अहमियत दी जाती है तब बच्चा सीखने के बजाय बेहतरीन अंकों को हासिल करने पर जोर देने लगता है। दूसरी, चयन का मौका मिलने पर बच्चे मुश्किल कामों को टालने लगते हैं। तीसरी, सोचने पर वक्त लगाने के बजाय बच्चे येन-केन प्रकारेण सही जवाब की तलाश में लगने लगते हैं। चौथी, बच्चे सवाल पूछने से कतराने लगते हैं। पांचवीं, मुश्किलों से जूझने वाले बच्चे खुद को कमजोर मानने लगते हैं और नतीजतन निराशा की ओर बढ़ जाते हैं। धीरे-धीरे उनमें नाकाम होने का डर भी गहरे तक पैठ जाता है।

> *"सबसे खराब तब होता है जब लगातार खराब अंक आते हैं फिर बच्चे व अध्यापक भी उसी तरह के अंकों या श्रेणियों की उम्मीद करने लगते हैं। इसलिए ऐसे सवाल किए जाने चाहिएं, जिनकी मदद से बच्चों की खूबियों व खामियों के बारे में जानकारी मिले और उससे जुड़ा फीडबैक तभी काम का हो सकता है जब उससे हरेक बच्चे को अपनी खास कमजोरियों या खूबियों के बारे में जानकारी व मदद मिले और अपनी खामियों के सबूतों के साथ उन्हें दुरुस्त करने व खूबियों को मजबूत करने के मौके व साधन मिलें।"*

आकलन से मिली सूचनाओं का बच्चों के साथ इस्तेमाल करने से जुड़ी नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदला जा सकता है। इस मामले में रचनात्मक आकलन एक ताकतवर हथियार हो सकता है बशर्ते इसका सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए। इसे नाकाम होने के डर और आपसी होड़ को बढ़ावा देने से बदलकर कामयाबी की संस्कृति और आपसी सहयोग से सीखने में तब्दील किया जा सकता है। बच्चे आकलन से मिले फीडबैक को स्वीकार कर सकते हैं बशर्ते उसमें होड़, तुलना न हो। इसके साथ ही फीडबैक किसी खास काम या गुण के बारे में हो तथा उसके साथ कोई सुझाव भी हो।

छात्रों द्वारा स्व-आकलनः स्व-आकलन रचनात्मक आकलन की एक अहम् व जरूरी कड़ी है। बहुत से नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रम रचनात्मक आकलन को समृद्ध करने में स्व-आकलन व साथियों द्वारा किए गए आकलन को भी शामिल करते हैं। बच्चे खुद का सही आकलन कर सकते हैं। वे अपना आकलन ईमानदारी के साथ व सही-सही कर सकते हैं। लेकिन उनके आकलन में कुछ समस्याएं होती हैं। जैसे, उनके सामने हासिल किए जाने वाले लक्ष्यों की अक्सर साफ तस्वीर नहीं होती। अचरज की बात है लेकिन सही यही है कि बच्चे कक्षायी शिक्षण को असंबंधित टुकड़ों की तरह ग्रहण करते हैं। जब उनको पूरी तस्वीर समझ आने लगती है तब वे ज्यादा असरदार व प्रतिबद्ध शिक्षार्थी बन जाते हैं। इसके साथ ही उनका स्व-आकलन शिक्षक व साथियों के बीच चर्चा का विषय बन सकता है और उस पर उन्हें पुनर्चिंतन का मौका भी मिल सकता है।

जब भी कोई सीखने की कोशिश कर रहा होता है तब उसकी कोशिश से जुड़े फीडबैक के तीन घटक होते हैं

1. वांछित लक्ष्य की पहचान करना
2. मौजूदा हालात के सबूत
3. दोनों के बीच की खाई को पाटने के तरीकों की कुछ समझ

सीखने को बेहतर करने की कोशिश करने वालों के लिए इन तीनों को थोड़ा समझना जरूरी है। यह दलील सीखने की शोध आधारित व्यापक विचारों संबंधी समझ के साथ संगत भी बैठती है। इस समझ में ज्ञान को गले से गोलियों की तरह गुटककर अपने आप सही जगहों पर जम जाने की उम्मीद नहीं रखी जाती बल्कि उसे पुराने विचारों के साथ जोड़कर समायोजित किया जाता है। नए व पुराने ज्ञान में असंगतता या खराब होने पर सोच-समझकर उसका निदान या समाधान किया जाता है। यानी, हम कह सकते हैं कि अगर रचनात्मक आकलन को उत्पादक होना है तो छात्रों को स्व-आकलन में प्रशिक्षित होना चाहिए ताकि वे सीखने के मकसदों को समझ सकें और यह भी समझ सकें कि उनसे क्या हासिल करने की उम्मीद की जाती है।

"अगर अध्यापक यह मानता है कि ज्ञान का दान किया या लिया जाता है तो रचनात्मक आकलन की जरूरत ही नहीं है। ज्ञान निर्माण व सीखने से जुड़ी पारंपरिक मान्यताओं से जूझना और उन्हें सीखने की शोध आधारित मान्यताओं में तब्दील करना एक बड़ी चुनौती है। इसका तरीका सिर्फ वैयक्तिक अध्यापन नहीं बल्कि सवाल-जवाब की, गहराई से सोचने की संस्कृति विकसित करना है जिससे छात्र साथियों के साथ अध्यापकों के साथ चर्चा से सीख सकें।"

असरदार अध्यापन का विकासः शोधों का अध्ययन यह भी दिखलाता है कि रचनात्मक आकलन के जरिए अध्यापन को असरदार बनाने के लिए शिक्षण योजना के प्रमुख घटकों की बारीकी से छानबीन करने की जरूरत पड़ती है, उनमें से कुछ पर आगे बात की गई है।

1. काम का चयनः कक्षा में किए जाने वाले काम का चयन स्कूल व घर पर किए जाने वाले काम के साथ-साथ सीखने के मकसदों को ध्यान में रखकर चुना जाना चाहिए। काम ऐसा होना चाहिए जिसमें अवलोकन, चर्चा, ध्यान से सुनने, लिखने आदि के खूब सारे मौके मिलें ताकि बच्चे अपनी समझ को संप्रेषित कर सकें।

2. चर्चा/बातचीतः चर्चा/बातचीत से ज्ञान व समझ को बढ़ाने में मदद मिलती है। इस दौरान अध्यापक शिक्षार्थियों के चिंतन को समझ कर उसे दिशा दे सकता है। लेकिन अध्यापक व शिक्षार्थी के बीच चर्चा की कुछ जानी-मानी समस्याएं होती हैं जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। जैसे,

अ. अध्यापकों के जवाब बच्चों को सीखने में थोड़ा अटका देते हैं, जैसे कइयों को किसी खास जवाब की तलाश रहती है, तो कइयों को अनजाने जवाबों से जूझने के मामले में खुद पर भरोसा नहीं होता। सो, वे ऐसे सवाल करते हैं जिससे उन्हें उनका मनचाहा जवाब तयशुदा शब्दों में मिल जाए।

ब. कई अध्यापक अपनी बातचीत इस तरह से चलाते हैं कि अनजाने गैर-पारंपरिक जवाब आएं ही नहीं। धीरे-धीरे बच्चे समझ जाते हैं कि अध्यापक नहीं चाहते कि वे सोचें। फिर वे वही बोलने लगते हैं जो अध्यापक चाहता है और वही अनुमान लगाने लगते हैं जिनकी उनसे उम्मीद की जाती है।

स. इसी तरह एक खास तरह की बातचीत में सिर्फ अध्यापक सवाल पूछता है। पल दो पल इंतजार करता है फिर खुद ही जवाब दे देता है। इस तरह की बातचीत के दो नतीजे होते हैं। पहला, यह स्थापित होता है कि वही सवाल सवाल होता है जिसका कम वक्त में जवाब दिया जा सके। दूसरा, जवाब अगले सवाल में आ ही जाएगा इसलिए सोचने की जरूरत नहीं है। इसमें वे ही बच्चे बोलते हैं जो तुरंत जवाब दे पाते हैं बाकी चुप बैठे रहते हैं, अध्यापक सवालों का कठिनाई स्तर को कम करके व कुछ बच्चों से जवाब लेकर बातचीत को पूरी कर लेता है। पाठ आगे बढ़ जाता है लेकिन ज्यादातर को कुछ समझ नहीं आता।

सवाल जवाब रूपी चर्चा के इस दुष्चक्र को तोड़ने का तरीका यह हो सकता है कि,

बच्चों को जवाब देने के लिए पर्याप्त वक्त दें।
छोटे समूहों में सवाल पर चर्चा करने दें।
संभावित जवाबों में से चुनने का मौका दें।
सभी से जवाब लिखवाएं व कुछ से उनके जवाब पढ़वाएं।

सार रूप में कहा जाए तो छात्र अध्यापक चर्चा/संवाद को विचारपरक, पुनर्चिंतनात्मक और समझ की छानबीन करने वाला होना चाहिए।

3. परीक्षाः अच्छी परीक्षा को सीखने का मौका बनना चाहिए। कक्षा परीक्षा और गृहकार्य फीडबैक के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। अनियमित लंबी परीक्षाओं के बदले नियमित व छोटी परीक्षाएं ज्यादा अच्छी हैं। किसी भी नई सीखी हुई चीज की उसके सीखने के सप्ताह के अंदर ही परीक्षा ले लेनी चाहिए लेकिन ज्यादा परीक्षाएं भी नुकसान करती हैं। परीक्षण मदों को प्रमुख शैक्षिक लक्ष्य के संदर्भ में प्रासंगिक होना चाहिए व इसके साथ ही बच्चों को समझ में भी आना चाहिए।

4. अच्छे सवाल व फीडबैकः शोध हमें बताते हैं कि सिर्फ अंकों व श्रेणियों को बताने से फायदा नहीं होता। सबसे खराब तब होता है जब लगातार खराब अंक आते हैं फिर बच्चे व अध्यापक भी उसी तरह के अंकों या श्रेणियों की उम्मीद करने लगते हैं। इसलिए ऐसे सवाल किए जाने चाहिएं, जिनकी मदद से बच्चों की खूबियों व खामियों के बारे में जानकारी मिले और उससे जुड़ा फीडबैक तभी काम का हो सकता है जब उससे हरेक बच्चे को अपनी खास कमजोरियों या खूबियों के बारे में जानकारी व मदद मिले और अपनी खामियों के सबूतों के साथ उन्हें दुरुस्त करने व खूबियों को मजबूत करने के मौके व साधन मिलें।

रचनात्मक नजरिए से देखें तो सीखने के अंत में किया जाने वाला आकलन फालतू का है क्योंकि तब तक सीखने के लिहाज से बहुत देर हो चुकी होती है। रचनात्मक आकलन के अच्छे इस्तेमाल में कई मुश्किलें भी पैदा हो सकती हैं। जैसे, कुछ छात्र बदलाव के प्रति अनिच्छुक हो सकते हैं। यह भी होता है कि बदलाव के फायदे बदलाव के बाद ही समझ में आते हैं, पहले उन्हें समझा कर बच्चों को उनके लिए राजी कर पाना कई बार मुश्किल होता है।

कई बार शुरुआत में कक्षा में अध्यापक के काम का समय बढ़ जाता है। खास तौर पर उसका एक मकसद सीखने के प्रति छात्रों के नजरिए और उनके सीखने के तरीकों में बदलाव करना हो। इसे काम लेते समय अध्यापकों का सामना दो बुनियादी मुद्दों से होता है, जो उनके सामने आने वाली कई समस्याओं की जड़ में होते हैं।

पहला, सीखने के बारे में अध्यापक की मान्यताएं/विश्वासः उदाहरण के लिए, अगर अध्यापक यह मानता है कि ज्ञान का दान किया या लिया जाता है तो रचनात्मक आकलन की जरूरत ही नहीं है। ज्ञान निर्माण व सीखने से जुड़ी पारंपरिक मान्यताओं से जूझना और उन्हें सीखने की शोध आधारित मान्यताओं में तब्दील करना एक बड़ी चुनौती है। इसका तरीका सिर्फ वैयक्तिक अध्यापन नहीं बल्कि सवाल-जवाब की, गहराई से सोचने की संस्कृति विकसित करना है जिससे छात्र साथियों के साथ अध्यापकों के साथ चर्चा से सीख सकें।

दूसरा, सभी छात्रों में सीखने की संभावना के बारे में अध्यापकीय विश्वासः ऐसे देश में जहां हाल ही में एक सदी से पहले तक ज्ञान हासिल करना कुछ खास जातियों व उनमें भी सिर्फ आदमियों के लिए रीति-रिवाजों में बांधकर सुरक्षित रखा गया हो, जहां बड़ी मुश्किल से सौ सालों की जद्दोजहद के बाद लाए गए आधे-अधूरे शिक्षा के अधिकार कानून को बना पाना मुमकिन हो पाया हो वहां यह एक विशाल चुनौती है कि अध्यापक अपनी पारंपरिक मान्यता की चीर-फाड़ करके इस मान्यता पर यकीन करना आरंभ कर पाएं कि सिर्फ कुछ ही नहीं हरेक इंसान सीखने की भरपूर संभावनाएं रखता है।

नीति में बदलाव के मुद्दे

यहां तक आते-आते यह साफ हो जाता है कि सिर्फ निवेश बढ़ाकर तथा नतीजों को नापकर बदलाव नहीं किया जा सकता। इसके लिए कक्षा के भीतर बदलाव करने की जरूरत है और रचनात्मक आकलन कक्षा में किए जाने वाले बदलाव से जुड़े कई मुद्दों में से एक है। आखिर में विलियम और ब्लैक बदलाव का एक कार्यक्रम कुछ इस तरह से सुझाते हैंः

1. सामान्य सिद्धांतों के रूप में पेश किया गया विचार कितना ही अच्छा लगे, उसकी बुनियाद शोध में कितनी ही गहरी क्यों न हो, अध्यापकों को वह पसंद नहीं आता। क्योंकि उस विचार को रोजमर्रा के कामकाज में बदलने का बोझ अध्यापकों के मत्थे मढ़ दिया जाता है। फिर उन्हें बदलावों के बारे में सुन-सुनकर भरोसा नहीं होता क्योंकि उनके बारे में बात करने वालों के पास न तो इतनी हिम्मत होती है और न ही इतनी काबिलियत कि वे उन विचारों को कक्षा की जमीन पर उतार कर दिखा पाएं।

इसलिए अध्यापकों को उन सिद्धांतों के जीवंत उदाहरण चाहिएं जो उन्हें अपने आस-पास होते दिखाई दें तथा उनसे जुड़े अध्यापक या दूसरे इंसान उन्हें जमीन पर उतारते दिखाई दें। कक्षा में किया जाने वाला शिक्षण अभ्यास लंबे चौड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों से नहीं बदल सकता। वह तभी हो सकता है जब ऐसे काफी सारे 'प्रशिक्षक' हों जो जानते भी

हों कि क्या तो करना है और कैसे करना है तथा वैसे ही क्यों करना है। लेकिन ऐसे व इतने सारे व्यक्ति तो हैं नहीं और हमारे यहां अच्छे अध्यापक व अध्यापक-शिक्षक निर्माता संस्थानों के अकाल में बहुत जल्द उनके होने की उम्मीद भी नहीं है। इसलिए एक रास्ता यह हो सकता है कि,

i. स्थानीय स्तर पर स्कूलों के समूह बनाए जाएं।
ii. स्कूल आधारित रचनात्मक आकलन के तौर-तरीकों को विकसित करने की तैयारी में उनकी मदद की जाए। वे मुद्दे तय करें, सामग्री बनाएं, उसे इस्तेमाल करके उसकी भी जांच करें, उसे दूसरे स्कूलों के साथ साझा करें, आदि।
iii. यह काम हरेक विषय में अलग अलग किया जाए।
iv. ऐसे स्कूलों व अध्यापकों की योजना बनाने, उसकी समीक्षा करने, अपने अनुभवों को सिद्धान्त में बदलने में, अपने सबूतों की विवेचना करने में का तंत्र बनाया जाए।
v. जरूरत पड़ने पर असरदार शिक्षण के सबूतों को इकट्ठा करने में बाहरी आकलनकर्ताओं की मदद ली जाए।

2. प्रसारः आरंभ में इसका प्रसार बेहद धीमा रहेगा। हो सकता है कि जहां पर रचनात्मक आकलन काम में लिया जा रहा हो वहां के अनुभवों की रोशनी में कुछ दूसरे स्कूल अपने पारंपरिक आकलन के अनुभवों को देखना-समझना चाहें। बाद में कुछ स्कूलों से नतीजे मिलने और संसाधनों के उपलब्ध होने पर उसकी गति थोड़ी बढ़ सकती है, लेकिन रहेगा धीमा ही।

3. अड़चनें हटानाः मौजूदा शिक्षा प्रणाली रचनात्मक आकलन को विकसित करने के रास्ते में कदम-कदम पर अड़चनें पैदा करती हैं। जैसे बाहरी परीक्षणों का सीखने पर गहरा व व्यापक नकारात्मक असर पड़ता है। उसे कम करने के लिए बाहरी परीक्षणों व रचनात्मक आकलन के बीच के संबंधों को मजबूत करने की जरूरत है।

बाहरी योगात्मक आकलन स्कूलों की जवाबदेही में जनता का भरोसा बढ़ाते हैं इसलिए यह किया जा सकता है कि उनमें और रचनात्मक आकलन के बीच संबंधों को मजबूत बनाया जाए। रचनात्मक आकलन में अध्यापक की प्रमुख भूमिका होनी चाहिए और बाहरी योगात्मक आकलन में अध्यापक की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए।

4. शोध की भावी दिशाएंः रचनात्मक आकलन व योगात्मक आकलन के बीच संबंधों पर शोध किया जाना चाहिए।

आखिरी बातः क्या हम शैक्षिक स्तरों को ऊपर उठाने के प्रति संजीदा हैं?

अब तक की बातचीत से यह पूरी तरह से साफ हो जाता है कि बदलाव की जिम्मेदारी सरकार को ही उठानी पड़ेगी, हालांकि कामयाबी सरकारी एजेंसियों, अकादमिक शोधकर्ताओं तथा स्कूल आधारित अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों पर निर्भर करेगी। ब्लैक व विलियम का प्रमुख तर्क यही है कि कक्षा में मौजूद अध्यापक व बच्चों की मदद से ही बच्चों व स्कूलों व देश के शैक्षिक स्तर ऊपर उठाए जा सकते हैं। शोधों के अध्ययन से इस बात के पुख्ता सबूत मिलते हैं कि रचनात्मक आकलन उसमें एक कारगर औजार हो सकता है। इसलिए राज्य व देश के नीति निर्धारकों को इस मौके का इस्तेमाल करके रचनात्मक आकलन को सीखने व सिखाने के रोजमर्रा के कामकाज का अनिवार्य हिस्सा बनाने के मामले में अगुवाई करनी चाहिए। ◆

प्रस्तुति : रवि कांत

(यह प्रस्तुति पॉल ब्लैक एवं डेलन विलियम द्वारा लिखित ''इनसाइड द ब्लैक बॉक्सः रेजिंग स्टैंडर्ड थ्रू क्लासरूम असेसमेन्ट पर आधारित है। यह अंग्रेजी के मूल लेख का संक्षिप्त एवं भावानुवाद है।)

लेखक परिचयः

पॉल ब्लैकः किंग्स कॉलेज, लंदन के स्कूल ऑफ एज्युकेशन में प्रोफेसर एमेरेट्स हैं।

डेलन विलियमः किंग्स कॉलेज, लंदन के स्कूल ऑफ एज्युकेशन के विभागाध्यक्ष और शैक्षिक आकलन के प्रोफसर हैं।